करता रहता है, जबकि पूर्ण तत्त्वज्ञ अपना समय नष्ट किए बिना प्रत्यक्ष रूप से कृष्णभावना अर्थात् भगवद्भक्तियोग में तत्पर हो जाता है। सम्पूर्ण गीता में आद्योपान्त पद-पद पर इसी सत्य पर बल दिया गया है। फिर भी गीता के हठाग्रही व्याख्याकार परतत्त्व और जीवतत्त्व को एक मानते हैं।

वैदिक ज्ञान को श्रुति कहते हैं, क्योंकि वह सुनने से होता है। वास्तव में वैदिक ज्ञान को श्रीकृष्ण से अथवा उनके प्रामाणिक प्रतिनिधि से ग्रहण करना चाहिए। यहाँ श्रीकृष्ण ने विशद तत्त्व-विवेचन किया है, अतः इसका श्रवण करे। पशुओं के समान एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देने से कोई लाभ नहीं होगा। सच्चे लाभ के लिए प्रामाणिक आचार्यों से ज्ञान को धारण करना चाहिए। ऐसा नहीं कि स्वयं बौद्धिक तर्क-वितर्क (मनोधर्म) करता रहे। आत्मसमर्पणशील भाव के साथ भगवद्गीता से यह सुनना चाहिए कि सब जीव सदा श्रीभगवान् के वश में हैं। जो यह जान जाता है, भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार वह सम्पूर्ण वेदों के तात्पर्य को जानता है। दूसरा कोई वेदों के तात्पर्य को नहीं जानता।

भजते शब्द आशयपूर्ण है। अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग श्रीभगवान् की सेवा के अर्थ में है। यदि कोई मनुष्य पूर्ण कृष्णभावना के साथ भगवद्भक्तियोग में लगा हुआ है तो समझना चाहिए कि उसने सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान को जान लिया है। वैष्णव परम्परा में माना जाता है कि जो श्रीकृष्ण के भक्तियोग के परायण है, उसे परमसत्य को जानने के लिए किसी अन्य परमार्थ-साधन की अपेक्षा नहीं है। भक्तियोग में तत्पर होने के प्रभाव से वह पहले ही उस स्तर तक पहुँच चुका है। उसके लिए ज्ञान की प्रारम्भिक पद्धतियों में कोई सार नहीं रहता। प्रकारान्तर से, हजारों जन्मों तक तर्क-वितर्क करने पर भी यदि कोई इस ज्ञान तक नहीं पहुँचता कि श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और उनकी शरण में जाना जीव का परम धर्म है, तो इतने वर्षों और जन्मों तक किया वाद-विवाद और मनोधर्म समय का निरर्थक अपव्यय है।

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।।२०।।

इति=इस प्रकार (संक्षेपरूप में); **गुह्यतमम्**=परम गोपनीय; **शास्त्रम्**=शास्त्र; **इदम्**=यह; **उक्तम्**=प्रकट किया गया; **मया**=मेरे द्वारा; **अनघ**=हे निष्पाप अर्जुन; **एतत्**=इसे; **बुद्ध्वा**=तत्त्व से जानकर; **बुद्धिमान्**=बुद्धिमान्; **स्यात्**=हो जाता है; **कृतकृत्यः**=परमसिद्ध (अपरोक्षज्ञानी); **च**=तथा; **भारत**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे निष्पाप अर्जुन! इस प्रकार यह वैदिक शास्त्रों का परम गोपनीय सार मेरे द्वारा प्रकट किया गया। इसको जानने वाला बुद्धिमान् और कृतार्थ हो जाता है।।२०।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने स्पष्ट किया है कि यह तत्त्व सम्पूर्ण शास्त्रों का परम सार है। यह